RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2015-17

ओ३म्

साप्ताहिक

# आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्षः 45, अंक : 10 एक प्रति 2 : रुपये

कुल पृष्ठ : 8

रविवार 31 मई, 2020

विक्रमी सम्वत् 2077, सृष्टि सम्वत् 1960853121

दयानन्दाब्द : 196 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-45, अंक : 10, 28-31 मई 2020 तदनुसार 18 ज्येष्ठ, सम्वत् 2077 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

# आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आह्वान पर कई आर्य समाजों ने राशन वितरित किया

कोरोना वायरस की भयंकर बीमारी की रोकथाम के लिये पूरे देश में इस समय कर्फ्यू लगा हुआ है। ऐसे में रोजमर्रा कमा कर खाने वाले दिहाड़ीदार लोगों के लिये परेशानी खड़ी हो गई है। इसी परेशानी को देखते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों के पदाधिकारियों से निवेदन किया कि वह अपने आसपास रहने वाले दिहाड़ीदार मजदूरों की रोजमर्रा की समस्याओं के लिये भोजन, राशन, सब्जी, तेल इत्यादि का सहयोग दें। इस आह्वान को देखते हुये सभा से सम्बन्धित आर्य समाजों ने जरूरतमंदों को सहयोग के लिये अपना हाथ बढ़ाया। इन आर्य समाजों में आर्य समाज नवांशहर ने 51,000 रुपये का चैक स्थानीय प्रशासन को दिया और कई दिनों तक लगातार 200 आदमियों को सुबह, दोपहर एवं सायं का भोजन प्रशासन को उपलब्ध करवाया। इसके साथ ही आर्य समाज नवांशहर के पदाधिकारी कोरोना से पीड़ित मरीजों को लगातार फल इत्यादि बांट रहे हैं। आर्य समाज अबोहर ने 21,000 रुपये का चैक स्थानीय प्रशासन को दिया ताकि वह गरीब परिवारों को भोजन इत्यादि वितरित कर सकें। आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना ने राशन वितरित किया और गरीब परिवारों को भोजन इत्यादि बांटा। आर्य समाज गौशाला रोड फगवाड़ा ने स्थानीय प्रशासन को 21,000 रुपये का चैक भेंट किया। आर्य समाज मोगा के पदाधिकारियों ने लगभग एक लाख रुपये का राशन गरीब परिवारों में वितरित किया। आर्य समाज राजपुरा ने भी आम गरीब जनता में राशन वितरित किया। आर्य समाज फाजिल्का के पदाधिकारियों ने भी राशन वितरित किया। आर्य समाज धूरी के पदाधिकारियों ने गरीब बस्तियों में जाकर राशन वितरित किया। इसके साथ ही आर्य समाज घिलौड़ी गेट पटियाला और श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला ने भी लगभग 30,000 रुपये स्थानीय प्रशासन को भेंट किये। आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर, आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा जालन्धर, आर्य समाज बस्ती बाबा खैल जालन्धर, आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर, आर्य समाज गांधी नगर-1 जालन्धर, आर्य समाज संत नगर जालन्धर, आर्य समाज गांधी नगर-2 जालन्धर, आर्य समाज कबीर नगर जालन्धर ने भी धनराशि एकत्रित कर 25,000 रुपये का चैक जालन्धर प्रशासन को भेंट किया। आर्य समाज चौक बठिंडा ने भी लगभग एक सौ गरीब परिवारों में राशन वितरित किया। आर्य समाज बरनाला एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला ने लगभग तीन हजार के करीब मास्क जिला प्रशासन को भेंट किये ताकि वह गरीब परिवारों में दिये जा सकें। आर्य समाज औहरी चौक बटाला ने भी राशन आम जनता में बांटा। आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के पदाधिकारियों ने भी गरीब परिवारों एवं झुग्गी झोपड़ियों में रहने वाले लोगों को राशन वितरित किया। आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर के पदाधिकारियों ने भी अपनी आर्य समाज की ओर से गरीब परिवारों में करीब 28 दिनों तक भोजन इत्यादि बनाकर वितरित किया। इसके साथ ही आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के पदाधिकारियों ने लगातार कई दिनों तक भोजन बना कर गरीब परिवारों में बांटा ताकि कोई गरीब भूखा न रहे। दयानन्द मैडीकल कालेज एवं अस्पताल लुधियाना में भी कोरोना का टैस्ट किया जा रहा है। यदि कोई गरीब आर्य परिवार सहायता चाहता है तो उसे फ्री सहायता उपलब्ध करा दी जाती है।

इस तरह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी के आह्वान पर पंजाब की लगभग सभी आर्य समाजों ने अपना अपना सहयोग प्रदान किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अन्तरंग सदस्यों ने भी अपना पूरा पूरा सहयोग दिया। श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि भारत कोरोना महामारी पर विजय प्राप्त करेगा क्योंकि सारा देश एकजुट होकर लड़ रहा है। उन्होंने कहा कि लाकडाउन की वजह से घर में बुजुर्गों की स्थिति बिगड़ रही है इसीलिये सभी अपने अपने घरों में अपने अपने बुजुर्गों का खास ध्यान रखें और उनसे संवाद बनाये रखें ताकि उनको भी महसूस हो कि परिवार हमारा ध्यान रख रहा है। पंजाब की कई आर्य समाजें अभी भी सहायता प्रदान कर रही हैं।

## आर्य मर्यादा के पाठकों से निवेदन

कोरोना महामारी के कारण लगे कर्फ्यू एवं लाकडाउन की वजह से आर्य मर्यादा साप्ताहिक का पिछले 29 मार्च 2020 से 19 मई 2020 तक कोई भी अंक प्रकाशित नहीं किया जा सका। इस महामारी से कई बहुमूल्य जानें चली गई हैं जिसका हमें बहुत दुख है। इस वैश्विक महामारी ने दुनिया में बहुत ज्यादा नुक्सान किया है और लगभग तीन लाख के करीब लोगों ने अपनी जान गवां दी है। अब सरकार ने लाकडाउन में कुछ ढ़ील देने का निश्चय किया है इसलिये हम भी आर्य मर्यादा साप्ताहिक का प्रकाशन पुनः शुरू कर रहे हैं। आशा है पाठक पूर्व की भान्ति हमें अपना पूरा सहयोग प्रदान करेंगे।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं महामंत्री
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

# वैदिक संस्कृति-संक्षिप्त विवेचन

ले.-शिवनारायण उपाध्याय, दादाबाड़ी कोटा (राज.)

वर्तमान काल में सर्वमान्य तथ्य है कि ऋग्वेद विश्व की प्राचीनतम पुस्तक है। सत्य तो यह भी है कि चारों वेद ही प्राचीनतम हैं। वेद ज्ञान विज्ञान के विशाल भण्डार हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती का कथन है कि 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।' मेरी दृष्टि से इसमें कोई अत्युक्ति नहीं है। वेद में मानव जीवन को श्रेष्ठतम बनाने के लिए कई उपाय भी सुझाये हैं। वेद की शिक्षा को यदि आचरण में स्थान दे दिया जाये तो यह विश्व स्वर्ग की कल्पना को पृथ्वी पर ही साकार रूप दे देगा।

वेद मनुष्यों को किसी संकुचित दायरे में रहना नहीं सिखाता है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 53 की छठी ऋचा में कहा गया है कि, 'मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्।' अर्थात् हम सच्चे रूप में मननशील मानव बने और अपनी सन्तान को देवता के रूप में जन्म दें। देवता दान देने वाला, ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित तथा ज्ञान का विस्तार करने वाला होता है।

क्या वैदिक संस्कृति पुरूष प्रधान नहीं है? इसका उत्तर है कि वैदिक संस्कृति पुरूष प्रधान नहीं है। वेदों में स्त्री-पुरूष को एक दूसरे का पूरक माना गया है। साथ ही स्त्री को अधिक सम्मानित माना गया है। ऋग्वेद मण्डल 8 सूक्त 33 की ऋचा 19 कहती है।

**अधः पश्य स्व मोपरि सन्तरां पादकौ हरः।**

**मा ते कशप्लको दृशन् स्त्री ही ब्रह्मा बभूविथ।।**

सभी जानते हैं कि किसी भी देवयज्ञ में ब्रह्मा का पद सर्वोच्च होता है। सम्पूर्ण यज्ञ उसी के आदेशानुसार सम्पन्न किया जाता है। इसी प्रकार गृहस्थरूपी यज्ञ में स्त्री को ब्रह्मा का स्थान प्राप्त है। गृह का सम्पूर्ण कार्य उसी के आदेशानुसार और उसकी देखरेख में ही सम्पन्न होता है। तभी तो श्रीरामचन्द्र जब माता कौशल्या से वनवास जाने की आज्ञा लेने गए थे तो माता ने कहा था कि यदि पिता ने तुम्हें वनवास जाने का आदेश दिया है तो मैं आदेश दूंगी कि वनवास जाने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि माता सन्तान के लिए पिता से बड़ी होती है परन्तु जब श्रीरामचन्द्र ने कहा कि पिता के आदेश के साथ इसमें माता कैकेयी की भी सम्मति है तो फिर माता कौशल्या ने उन्हें वन में जाने की आज्ञा दे दी। कुछ लोगों का कथन है कि वैदिक संस्कृति में पुंसवन संस्कार में परमात्मा से श्रेष्ठ पुत्र प्रदान करने की प्रार्थना की जाती है कन्या जन्म के लिए प्रार्थना नहीं की जाती है।

इस समस्या का समाधान सामवेद मंत्र संख्या 1460 व 1461 में हुआ है। इन मंत्रों के ऋषि वसिष्ठ हैं। कहा जाता है तो जब वसिष्ठ ने विवाह के समय अपनी पत्नी का हाथ थामा तो कहा 'त्वया वयं धारा उदन्या इव अतिगाहे महि द्विषः' तेरे साथ मिलकर हम अप्रीति कर दुर्गुणों से ऐसे तैर जाएं जैसे पर्वतीय जल धाराओं को हम एक दूसरे का हाथ पकड़ कर पार करते हैं।

**जनीयन्तोन्यग्रः पुत्रीयन्तः सुदानवः।**

**सरस्वती हवामहे।। सामवेद मंत्र संख्या 1460**

(जनीयन्तः) स्त्री की चाहना करते हुए (पुत्रीयन्तः) और पुत्री की कामना करते हुए (सुदानवः) परोपकारी (अग्रवः) हम उपासक (न) आज (सदस्वन्तम्) सर्वज्ञ परमात्मा को (हवामहे) पुकारते हैं।

मंत्र का भावार्थ यह है कि इस संसार सागर को पार करना अत्यन्त कठिन है परन्तु पति-पत्नी मिलकर इसे पार कर सकते हैं। कुछ विद्वान् 'पुत्रीयन्तः' का अर्थ 'पुत्र की कामना' करते हैं जो हास्यास्पद है।

कन्या को स्वयंवर पद्धति से अपने लिए पति चुनने का अधिकार यजुर्वेद में है। हम जानते हैं कि चुनने वाला चुने जाने वाले से बड़ा होता है।

**सम्राज्ञ्येधि श्वशुरेषु सम्राज्ञ्युत देवृषु।**

**ननान्दुः सम्राज्ञ्येधि सम्राज्ञ्युत श्वश्र्व।। अथर्व. 14.1.44**

इस मंत्र में तो स्त्री को सम्राज्ञी का पद दिया गया है।

ऋग्वेद मण्डल 5 सूक्त 60 की ऋचा 2 इस प्रकार है-

**अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय।**

**युवा पिता स्वपा रूद्र एषां पृश्निः सुदिना मरूद्भ्यः।।**

अर्थ-समाज में कोई न ज्येष्ठ है और न कोई कनिष्ठ है। सभी बन्धुजन मिल कर ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए कार्य कर विकसित होते हैं। श्रेष्ठ कर्मों का अनुष्ठान करने वाला, सदैव युवा रहने वाला, दुष्टों को दण्ड देकर रूलाने वाला रूद्र इनका पिता (पालक) है और इनके मनोरथों को पूर्ण करने वाला है।

ऋग्वेद में, वसुधैव कुटुम्बकम् और 'भवेत्येक नीडम' की बात कही गई है।

ऋग्वेद सम्पूर्ण संसार को एक परिवार मानता है।

पृथ्वी को एक बड़ा घौंसला मानता हैं, जिसमें हम सब मिलकर रहते हैं।

यजुर्वेद तो प्राणी मात्र को मित्र की दृष्टि से देखने को कहता है।

**दृते दृ्ंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्।**

**मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।**

**मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे।।**

**यजु. 36.18**

**अर्थ**-हम सभी प्राणियों को मित्रता की दृष्टि से देखें। सभी प्राणी भी मुझे अपने मित्र की दृष्टि से देखें। कोई भी प्राणी मुझसे किञ्चित भी वैर भाव न रखें। सभी जीवधारी पक्षपात छोड़कर एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। कभी किसी पर भी अन्याय न करें।

फिर 40वें अध्याय में तो वह प्राणी को अपने तुल्य ही मानता है।

**यस्मिन्त्सर्वाणि भूतान्यात्मेवा-भूद्विजानतः।**

**तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।। यजु. 40.7**

**भावार्थ**-जो परमात्मा के सहकारी प्राणीमात्र को अपनी आत्मा के तुल्य जानते हैं। एक अद्वितीय परमात्मा के शरण को प्राप्त होते हैं उनको मोह, शोक और लोभादि कभी प्राप्त नहीं होते हैं।

वेद पुरूषार्थ पर विशेष बल देते है भाग्यवाद पर नहीं।

**प्रेहि प्रेहि पथिभिः पूर्याणैर्येना ते पूर्वे पितर परेताः।**

**उभा राजानौ स्वधयामदन्तौ यमं पश्यासि वरूणं च देवम्।।**

**अथर्व. 18.1.54**

**अर्थ**-हे मनुष्य। तू (प्रेहि) आगे बढ़ (पूर्याणै) नगरों को जाने वाले (पथिभिः) मार्गों से (प्रइहि) आगे बढ़। (येन) जिस कर्म से (ते) तेरे (पूर्वे) पहले (पितर) पितृगण (परेता) पराक्रम से गए हैं। (उभा) दोनों (राजानौ) शोभायमान (देवम्) प्रकाशमान (यमन्) यम (न्यायकारी) परमात्मा को (च) और (वरूण) वरूण (श्रेष्ठ) जीवात्मा को (पश्यासि) तू देख।

**उत्तिष्ठ प्रेहि प्र द्रवौक कृणुष्व सधस्थे।**

**तत्र त्वं पितृभि संविदान सं सोमेन मदस्व स्वधाभि।।**

**अथर्व. 10.3.8**

**भावार्थ**-हे विद्वान्। उठ जा, आगे बढ़, आगे को दौड़, चलते हुए जगत् में समाज के बीच घर बना। वहीं तू पितृजनों के साथ मिलता हुआ ऐश्वर्य से मिलकर और असाधारण शक्तियों से मिल कर आनन्द प्राप्त कर।

यजुर्वेद अध्याय 40 के मंत्र संख्या दो में कर्म करते हुए जीने को कहा है-

**कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीवि-षेच्छतं समाः।**

**एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्मलिप्यपते नरे।।**

**अर्थ**-मनुष्य इस संसार में धर्म युक्त वेदोक्त कर्म करता हुआ-सौ वर्ष तक जीवित रहने की इच्छा करे। ऐसे जीवन जीने वाले व्यक्ति अधर्म युक्त, अवैदिक कर्म नहीं करते। कर्म उनमें लिप्त नहीं होता है। व्यक्ति को सदैव सजग रहकर ही कर्म करना चाहिए।

**यो जागार तमृच कामयन्ते, यो जागार तमु सामानि यन्ति।**

**यो जागार तमयं सोम आह तवाहमस्मि सख्येन्योकाः।।**

**साम. 1826**

**अर्थ**-जो मनुष्य जागृत रहता है उसको ऋग्वेद चाहता है जो जागा रहता है उसे सामवेद से वचन प्राप्त होता है। जो जागता है उसे यह सोम कहता है, मैं नियत स्थान वाला तेरी मैत्री में हूँ।

वेद में ईश्वर, जीव और प्रकृति को अनादि माना गया है। सृष्टि का उपादन कारण प्रकृति है। निमित्त कारण जीवात्मा है। ईश्वर प्रकृति और जीवात्मा को संयुक्त कर सृष्टि रचना करने वाला है।

**द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते।**

**तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्वत्त्य-नश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।।**

**ऋग्वेद 1.164.20**

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

# कोरोना योद्धाओं का हार्दिक अभिनन्दन

वैश्विक महामारी कोरोना के कारण सम्पूर्ण विश्व में हाहाकार मचा हुआ है। इस महामारी ने सम्पूर्ण विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है। चीन से प्रारम्भ हुआ यह वायरस धीरे-धीरे पूरे विश्व में फैल गया। इस वायरस के कारण जहाँ सभी देशों की अर्थव्यवस्थाएं प्रभावित हुई हैं वहीं पर लोग अपने ही घरों में कैद हो गए हैं। 22 मार्च से प्रारम्भ हुआ लॉकडाऊन अभी तक चल रहा है। ऐसी संकट की घड़ी में जहां लोग अपने तक सीमित हो गए हैं, एक दूसरे से दूरी बनाकर रह रहे हैं वहीं पर कुछ ऐसे लोग भी हैं जो इस त्रासदी में भी अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए देश को इस महामारी से मुक्त करने का प्रयास कर रहे हैं। इन्हीं कर्त्तव्यपरायण लोगों को कोरोना महामारी से लड़ने वाला महायोद्धा कहा गया है। इन कोरोना योद्धाओं में डॉक्टर, पुलिस कर्मचारी, सफाई कर्मचारी, समाजसेवी संस्थाओं से जुड़े लोग शामिल हैं जिन्होंने इन परिस्थितियों में भी अपना धैर्य नहीं खोया।

**डॉक्टर एवं स्टाफ नर्स**-कोरोना महामारी से लड़ने वाले डॉक्टर, स्टाफ नर्स, अस्पताल प्रशासन का महत्वपूर्ण योगदान है। ये लोग अपनी जान की चिन्ता किये बिना दिन-रात एक करके इस महामारी से देश को बचाने का प्रयास कर रहे हैं। इन संकट की परिस्थितियों में अनेक डॉक्टरों के साथ दुर्व्यवहार किया गया, सामाजिक बहिष्कार किया गया, स्टाफ नर्स के साथ दुर्व्यवहार किया गया, चैकअप करने गई डॉक्टरों की टीम पर पथराव किये गए परन्तु फिर भी इन्होंने अपना धैर्य नहीं खोया और आज भी जी-जान से लोगों की सेवा करने में लगे हुए हैं। ये सभी कोरोना से लड़ने वाले योद्धा हैं। जिन लोगों ने अपने परिवार से दूर रहकर, सामाजिक बहिष्कार तक को झेला, अपने पड़ोसियों द्वारा किये गए दुर्व्यवहार पर भी शालीनता का परिचय दिया, ऐसे कोरोना योद्धाओं का हार्दिक अभिनन्दन है। इन्हीं लोगों के साहस और धैर्य के कारण यह देश धीरे-धीरे इस महामारी की चपेट से बाहर निकलने का प्रयास कर रहा है।

**पुलिस प्रशासन**-डॉक्टरों के बाद इस महामारी से लड़ने में सबसे महत्वपूर्ण योगदान पुलिस प्रशासन का है। पुलिस को आमतौर पर क्रूर व्यवहार के लिए जाना जाता है। परन्तु इस संकटकाल में पुलिस प्रशासन ने अपने धैर्य का परिचय दिया है। जब पूरे देश में लॉकडाऊन तथा कर्फ्यू लागू हुआ तो पुलिस प्रशासन के सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि लोगों को घरों से बाहर निकलने से कैसे रोका जाए? परन्तु जिस धैर्य का परिचय पुलिस प्रशासन ने इस समय दिया है इसके लिए पुलिस प्रशासन अभिनन्दन का पात्र है। पुलिस प्रशासन ने लोगों को जागरूक करने के लिए अनेक प्रयास किए। इस संकट की घड़ी में कहीं पुलिस के जवानों ने गीत गाकर लोगों को घर पर रहने के लिए प्रेरित किया, कहीं यमराज का भेष बनाकर लोगों को डराकर जागरूक करने का कार्य किया तो कहीं पर कुछ शरारती तत्त्वों के साथ सख्ती के साथ भी निपटना पड़ा। परन्तु फिर भी इतने लम्बे लॉकडॉऊन में पुलिस प्रशासन ने प्रशंसनीय कार्य किया है। ऐसे कोरोना योद्धाओं का भी हार्दिक अभिनन्दन है।

**सफाई कर्मचारी**-इस महामारी से लड़ने में अगर सबसे महत्वपूर्ण योगदान किसी का है तो वे हैं कोरोना के महायोद्धा सफाई कर्मचारी। इस संकट के समय में सफाई कर्मचारियों ने सराहनीय कार्य किया है। ऐसे समय में जब लोग अपने घर का कूड़ा-कचरा उठाने से भी कतराते हैं, इन सफाई कर्मचारियों ने अपनी जान जोखिम में डालते हुए भी घर-घर जाकर कूड़ा उठाया और समाज को स्वच्छ बनाने में अपना प्रमुख योगदान दिया। इस महामारी में सबसे कठिन कार्य सफाई का था। कई स्थानों पर प्रशासन के द्वारा मास्क, सैनेटाईजर दस्ताने आदि सुविधाएं उपलब्ध नहीं करवाए जाने के बावजूद भी सफाई कर्मियों ने बड़ी लगन के साथ अपना कार्य किया। वायरस के बढ़ते प्रकोप के बीच में अगर सफाई व्यवस्था ठप्प पड़ जाती तो इस समस्या से निपटना बहुत कठिन था। इन सफाई कर्मियों का भी हृदय से अभिनन्दन करना चाहिए जो इन विकट परिस्थितियों में योद्धा बनकर उभरे हैं।

**समाजसेवी संस्थाएं**- कोरोना वायरस के कारण समाज का हर वर्ग प्रभावित हुआ है। उद्योगपतियों से लेकर मजदूर वर्ग तक इस महामारी का प्रभाव हुआ है। इस महामारी में श्रमिक वर्ग सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। घरों में बन्द होने के कारण लोगों के पास खाने के लिए राशन नहीं था। ऐसी विकट परिस्थितियों में समाजसेवी संस्थाएं आगे आई। इन संस्थाओं ने लोगो को घर-घर राशन पहुंचाने का कार्य किया। कुछ संस्थाओं ने भोजन पकाकर और उसके पैकेट बनाकर जरूरतमन्द लोगों तक पहुंचाए। कुछ संस्थाओं ने प्रशासन के साथ मिलकर लोगों तक सहायता पहुंचाने का कार्य किया। बड़े-बड़े उद्योगपतियों ने दिल खोलकर इस नेक कार्य में समाजसेवी संस्थाओं एवं सरकार का सहयोग किया। अगर इन विकट परिस्थितियों में ये संस्थाएं आगे न आती, सरकार तथा प्रशासन के साथ मिलकर कार्य न करती तो कोरोना महामारी से ज्यादा मौतें भुखमरी से होती। इन संस्थाओं ने घर-घर पहुँच कर लोगों को तमाम चीजें उपलब्ध करवाई। समाजसेवी संस्थाओं से जुड़े सभी लोगों ने कोरोना योद्धओं की भांति कार्य किया है। ये लोग भी अभिनन्दन के पात्र हैं।

जब देश में लॉकडाऊन की घोषणा हुई तो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं को आदेश दिया कि वे इन विकट परिस्थितियों में सरकार एवं प्रशासन का पूरा सहयोग करें। इसके साथ ही जरूरतमन्द लोगों की सहायता करने का आदेश जारी किया। सभा प्रधान जी के आदेशानुसार पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं ने पूरे पंजाब में कार्य करना शुरू कर दिया। लोगों को मास्क, सैनेटाईजर बाँटे गए। जरूरतमन्द लोगों को घर-घर जाकर राशन बाँटा, भोजन पकाकर उसके पैकेट भूखे लोगों तक पहुंचाए। कुछ संस्थाओं ने सहायता राशि के चैक बनाकर प्रशासन को भेंट किए।

इन विपरीत परिस्थितियों में जिन-जिन लोगों ने किसी भी प्रकार से सरकार एवं प्रशासन का सहयोग किया है, जरूरतमन्द लोगों की सहायता की है, लोगों को जागरूक करने का कार्य किया है, वे सभी कोरोना के महायोद्धा हैं। ऐसे लोगों का आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब हार्दिक अभिनन्दन करती है। ये सभी लोग सम्मान के पात्र हैं जो इन विकट परिस्थितियों से देश को निकालने का कार्य कर रहे हैं। हम सभी को अभी भी सतर्क रहना है क्योंकि देश में कोरोना मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। हम सभी को सरकार द्वारा दिए जाने वाले दिशा-निर्देशों का पालन करना है। लोगों से दूरी बनाकर रखनी है। मास्क लगाकर रखें, सैनेटाईजर का इस्तेमाल करते रहें। लोकडॉऊन में छूट का यह मतलब नहीं कि हम सरकार के दिशा-निर्देशों का पालन न करें, सोशल डिस्टेंस का पालन न करें अपितु इससे हमारी स्वयं की जिम्मेवारी बढ़ जाती है। हमें स्वयं दूरी का पालन करना है, कम से कम बाहर निकलना है, अपना तथा अपने परिवार का बचाव स्वयं करना है। इसलिए हम सभी स्वयं जागरूक बनें, लोगों को जागरूक करें। इस महामारी से मुक्त होने का यही ऊपाय है। जरूरतमन्द लोगों की सेवा करना अपना धर्म समझें। तभी हम राष्ट्र के जिम्मेवार नागरिक कहलाने के अधिकारी बन सकते हैं।

**प्रेम भारद्वाज**
**संपादक एवं सभा महामन्त्री**

# सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में महर्षि दयानन्द का योगदान

ले.-श्रीमती शशि गुप्ता डी.ए.वी. सीनियर पब्लिक स्कूल सूरजपुर, जिला पंचकूला

स्वामी दयानन्द एक दार्शनिक, चिन्तक, मनीषी, धर्म-मर्यादा संस्थापक मन्त्र द्रष्टा ऋषि थे। यूरोपीय शक्तियों के आने से पूर्व भारतीय हिन्दू समाज सर्वथा पीड़ित तथा पतन की ओर उन्मुख हो चुका था। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में समाज संस्कार के लिए, भारतीय नवजागरण हेतु स्वामी दयानन्द जी ने समाज में नव चेतना का प्रादुर्भाव किया। महर्षि दयानन्द ने अनुभव किया कि पाखण्ड, ढोंग, आडम्बर तथा मिथ्याचारों से देशवासी त्रस्त हैं। सन् 1867 के कुम्भ मेले में हरिद्वार में जाकर उन्होंने 'पाखण्ड खण्डिनी पताका' लहराई और धर्म एवं समाज में व्याप्त कुसंस्कारों और अन्ध विश्वासों का खण्डन किया। समस्त देश में भ्रमण किया, करोड़ों व्यक्तियों से वार्तालाप, शंका-समाधान आदि महान कार्य किये।

उन्होंने आठ प्रकार के पाखण्ड से सभी को दूर करने की नसीहत दी।

1. मनुष्यकृत पुराणादि ग्रन्थ
2. पाषाणादि पूजन
3. साम्प्रदायिक विकृतियां
4. तन्त्र ग्रन्थों में वर्णित वाम मार्ग
5. भांग आदि नशे
6. पर स्त्री गमन
7. चोरी
8. छल, कपट, अभिमान

वे देश के विभिन्न भागों में धर्म प्रचार करते, सामाजिक कुसंस्कारों तथा कुरीतियों के विरुद्ध आवाज़ उठाते हुए भ्रमण करते रहे। स्थान-स्थान पर पण्डितों, मुल्ला-मौलवियों तथा पादरियों आदि से शास्त्रार्थ हुये। विभिन्न स्थानों पर अपने भाषणों द्वारा शंका समाधान एवं विचार विमर्श द्वारा जनता को उद्बोधन देते हुए अपने मन्तव्यों का प्रचार करते रहे।

किसी सुव्यवस्थित संगठन के माध्यम से अपने विचारों को प्रभावी ढंग से लाना चाहते थे। अतः उन्होंने 7 अप्रैल 1875 को मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। स्वामी जी का मानना था कि यदि हम सामाजिक एकता के लिए बद्ध परिकर हो जाएं तो साम्प्रदायिक भिन्नता को समाप्त करना कुछ भी कठिन नहीं है। आर्य समाज के छठे नियम के अनुसार संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य बताया गया है तथा मनुष्य की शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति को सर्वोपरि लक्ष्य बताया गया है।

उन्होंने अनुयायियों में प्रखर राष्ट्रभक्ति जागृत करते हुए उन्हें निर्माणकारी कार्यों में लगाया। छुआछूत का उन्मूलन, नारी शिक्षण और नारी जागरण, कुरीति निवारण, रुढ़ियों का उन्मूलन, जाति प्रथा, मांसभक्षण, बाल विवाह, मूर्ति पूजा आदि का विरोध तथा अन्य ऐसे ही सुधार मूलक कार्यक्रमों का संचालन तथा जन जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

जाति प्रथा : 19वीं सदी के सुधार आन्दोलनों में आर्य समाज के पूर्ववर्ती ब्रह्म समाज ने यद्यपि समाज सुधार की विभिन्न योजनाओं को क्रियान्वित करने का यत्न किया किन्तु जाति प्रथा पर आघात करने का सामर्थ्य ब्रह्म सुधारकों में भी नहीं था। ब्रह्म समाज की उपासना स्थली पर वेदपाठी ब्राह्मणों को एक पर्दे के पीछे बिठाया जाता था और उसमें अन्य वर्णस्थ लोगों को प्रवेश की अनुमति नहीं थी। अस्पृश्यता को सर्वथा निर्मूल करने का प्रथम क्रान्तिकारी कार्य महर्षि दयानन्द जी के प्रयासों से सम्भव हुआ। आर्य समाज ने अपने जन्म काल से ही अस्पृश्यों एवं दलितों की दशा सुधारने हेतु उन जातियों के बालकों को गुरुकुलों में प्रवेश देकर विद्याध्ययन का समुचित अवसर प्रदान किया। यहाँ भंगी हरिजन आदि जातियों को सामाजिक तथा शैक्षिक उन्नति करने के बराबर अवसर प्रदान किये गये।

उन्होंने मदिरा पान जैसे सामाजिक बुराईयों को दूर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थान-स्थान पर नशा-निवारिणी समितियाँ स्थापित की। केवल मदिरा ही नहीं अपितु भांग, चरस, यहाँ तक कि तम्बाकू जैसे स्वास्थ्य विनाशक व्यसन का भी विरोध किया। अन्ध विश्वासों के जाल में जकड़े हिन्दू समाज को भूत-प्रेत, ओझाओं की झाड़-फूँक, ज्योतिष की मिथ्या धारणाओं आदि से मुक्त करने में भी वह अग्रगण्य रहे। दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा आदि समाज को घुन की तरह नष्ट करने वाली बुराईयों को दूर करने के लिए आर्य समाज सदा ही कटिबद्ध रहा। ऋषि दयानन्द गणित व ज्योतिष को तो मानते थे, परन्तु फलित ज्योतिष को वेद विरुद्ध, तर्क विरुद्ध एवं मनुष्य जीवन के लिए हानिकारक मानते थे। उन्होंने फलित ज्योतिष को ही मुस्लिम सुल्तानों के हाथों देश की पराजय का प्रमुख कारण बताया है। ऋषि दयानन्द जी ने फलित ज्योतिष का विरोध किया।

**मांस भक्षण की भर्त्सना:**

महर्षि दयानन्द जी ने स्पष्ट किया कि मांस का खाना किसी मनुष्य को उचित नहीं। दयालु परमेश्वर ने वेदों में मांस खाने आदि मारने आदि की विधि नहीं लिखी। इसलिए हे मांसाहारियों तुम लोगों को जब कुछ काल बाद खाने को पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे या नहीं?

**मूर्ति पूजा का खण्डन:**

जो सब जगत् का कर्त्ता, उपासना के योग्य, सर्वव्यापक और अनादि, अनन्त, अजर, अमर सच्चिदानन्द स्वरुप है उसी को इष्ट देव मानना चाहिए। स्वामी दयानन्द मूर्तिगृहों के सम्बन्ध में लिखते हैं-आपने लाखों रूपये लगाकर मन्दिर खड़े कर दिये हैं परन्तु यह तो बताइए इससे लाभ क्या हुआ? क्या ही अच्छा होता यदि यह द्रव्य जाति और देश के भले में लगता। मनुष्य मात्र के हितकर कार्य में लगता। बालक बालिकाओं की कोई पाठशाला स्थापित करके जनहित का परिचय देते तो अच्छा होता।

स्वामी जी के अनुसार वेदों की आज्ञा पर चलना धर्म है। वेदों में प्रतिमा पूजा की आज्ञा नहीं है। ईश्वर सर्वत्र है, उसे कोई वश में नहीं कर सकता। तुम मूर्तियों को ईश्वर मानते हो और फिर अपने हाथों से ताला लगा कर उन्हें मन्दिर में बन्द कर देते हो। तुम ही सोचो उनमें ईश्वरीय शक्ति कहाँ है? वे न वर दे सकती है और न शाप। वे तो जड़रुप हैं इसे ईश्वर मानोगे तो ईश्वर भी जड़ सिद्ध होगा।

**दाह संस्कार:**

मनुष्यों के देहावसान होने पर मृत शरीर को जमीन में गाड़ने या जल में बहाने तथा जंगल में फेंक देने की कुप्रथा का विरोध करते हुए स्वामी दयानन्द ने लिखा है। जब कोई देह छूटे तो न उसको गाड़ने, न जल में बहाने, न जंगल में फेंकने दे। केवल चंदन की चिता बनावें और जो यह समस्त न हो तो दो मन चन्दन, चार मन घी, पांच सेर कपूर, ढाई सेर अगर तगर लेकर वेदानुकूल जैसे कि संस्कार विधि में लिखा है, वेदी बना कर वेदमन्त्रों से होम करके भस्म करें।

**परस्त्री गमन:**

सौम्य युवको! वैसे तो व्यसन सभी बुरे हैं परन्तु वैश्या सबसे अधिक नाशकारिणी है। सभ्य देश, सभ्य भाषा, सभ्याचार आदि सभी गुण नष्ट हो जाते हैं। वीर्य और रज को अमूल्य समझें। जो कोई परस्त्री, वैश्या या दुष्ट पुरुषों के संग में खोते हैं, वे महामूर्ख होते हैं। जो इन दुर्व्यसनों से दूर रहता है उसे बल आरोग्य, बुद्धि और पराक्रम बढ़ के बहुत सुखों की प्राप्ति होती है।

**छल कपट:**

गृहस्थ कभी दुष्ट के प्रसंग से द्रव्य संचय न करे। दूसरों के साथ छल कपट करके कभी धन संचय न करे चाहे कितना ही दुःख आन पड़े। केवल धर्मादि कर्मों से प्राप्त होकर भोजनादि करना भक्ष्य है। इसलिए राजाओं को उचित है कि जो मादक द्रव्यों का सेवन करे, उनको अत्यन्त दण्ड देवे।

महर्षि दयानन्द जी के प्रयासों से ही बाल-विवाह बंद हुए, अनमेल विवाहों पर रोक लगी, वृद्ध विवाह घृणा से देखे जाने लगे तथा कम आयु की विधवाओं के पुनः विवाह को सामाजिक स्वीकृति मिली। स्वामी दयानन्द जी के अनुसार आर्यों का वर्ण विधान जन्मगत जाति पर आधारित नहीं है अपितु गुण, कर्म और स्वभाव से ही किसी मनुष्य में ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि होने का निश्चय किया जाना उचित है।

स्वामी जी के अनुसार लोभ, झूठ और अधर्म से चक्रवर्ती राज्य भी मिलता हो तथापि धर्म को छोड़कर चक्रवर्ती राज्य भी ग्रहण न करें। सभी विद्वानों के बीच यह नियम होना चाहिए कि अपने-अपने ज्ञान और विद्या के अनुसार सत्य का मंडन और असत्य का खंडन कोमल वाणी से करें जिससे

(शेष पृष्ठ 6 पर)

# आर्य समाज के द्वितीय नियम की वेदमूलकता

ले.-वीरेन्द्र कुमार अलंकार अध्यक्ष, दयानन्द चेयर फॉर वैदिक स्टडीज् एवं अध्यक्ष, संस्कृत विभाग पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़

स्वतन्त्रता का पूर्ण सुख नियम, मर्यादा व अनुशासन में ही है। नियमों से रहित जीवन उच्छृंखल होता है। इसलिए नियम स्वतन्त्रता के बाधक नहीं, साधक हैं। नियम किसी समाज की दृष्टि (Vision), संस्कृति, मानसिक उदात्तता व दर्शन के द्योतक होते हैं। आर्य समाज का Vision इस छठे नियम से स्पष्ट हो जाता है कि-संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। दस नियमों में क्रम का बड़ा महत्व है। प्रथम नियम में ईश्वर को आदिमूल मानकर यह सन्देश दिया है कि आर्य समाज ईश्वर को मानता है। दूसरे नियम में ईश्वर का स्वरूप स्पष्ट किया गया है-ईश्वर सच्चिदानन्द-स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

इस नियम में जिस शब्दावली का प्रयोग हुआ है, उसकी श्रुतिमूलकता का यहाँ विचार किया जा रहा है। ईश्वरवादियों ने कल्पनाओं के लोक में जाकर ईश्वर का जो स्वरूप विवेचित किया है, उससे ईश्वर विषय और अधिक उलझ गया है। इसलिए यह आवश्यक था कि वेद के ईश्वर का सारगर्भित विवरण प्रस्तुत किया जाए। आर्य समाजोक्त ईश्वर स्वरूप समझ में आ जाने पर अनेक शंकाएँ स्वत: निर्मूल हो जाती हैं। क्योंकि इस स्वरूप का उपजीव्य वेद है।

**1. सच्चिदानन्द स्वरूप की वेदमूलकता:**

यहाँ ईश्वर का स्वरूप निर्दिष्ट है। स्वरूप या लक्षण वह होता है, जो अन्यत्र प्रसक्त न हो। नैयायिक शास्त्र की त्रिधा प्रवृति मानते हैं-उद्देश्य, लक्षण और परीक्षा (त्रिविधा चास्य शास्त्रस्य प्रवृत्तिरूद्देशो लक्षणं परीक्षा चेति)। जैसे-'गौ:' यह उद्देश्य है। इसका लक्षण ऐसा होना चाहिए जो केवल 'गौ:' में ही प्रवृत्त हो। उसमें असंभव, अव्याप्ति या अतिव्याप्ति दोष न हों। यदि कोई कहे कि जिसके चार पाँव हैं या सफेद रंग है, वह गौ है, तो वह दोषयुक्त लक्षण है क्योंकि यह तो भेड़, कुत्ते में भी हैं। यह भी कहना अयुक्त है कि दूध देने वाला, पूँछ वाला व चार पैर वाला पशु 'गौ' है, तो इसकी व्याप्ति बकरी व भैंस भी है। इसलिए गाय का स्वरूप या लक्षण है-गलकम्बल होना (गो: सास्त्रादिमत्वम्)। सारी दुनिया के पशु देख लीजिए, पर यह गलकम्बल केवल गाय का ही होता है। इसी प्रकार ईश्वर का भी एक ऐसा लक्षण होना चाहिए जो केवल ईश्वर में ही घटित होवे। वैदिक आचार्यों ने वेद का अनुसन्धान करके ईश्वर का यह विलक्षण लक्षण किया है कि ईश्वर सच्चिदानन्द है। यह सत्, चित् और आनन्द का समन्वय कहीं भी अन्यत्र नहीं मिलेगा। सत् का अभिप्राय है सदावर्तमान। यदि ईश्वर को केवल सत्यस्वरूप कह देते तो इस लक्षण की अतिव्याप्ति प्रकृति व जीवात्मा में भी हो जाती, क्योंकि प्रकृति भी सत्-सदावर्तमान है। आत्म भी अविनाशी व सत् है। यदि सच्चिद्रूप कह देते तो प्रकृति में तो नहीं पर जीवात्मा में अतिव्याप्ति हो जाती, क्योंकि आत्मा चित्-चेतनवान् भी है। किन्तु सच्चिदानन्द का सामूहिक रूप केवल ईश्वर ही है। जीवात्मा भले ही चित् भी हो, पर वह आनन्दरूप नहीं है। विश्व में कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जिसे कभी कोई दु:ख ही न हुआ हो। इसलिए कोई प्राणी ईश्वर नहीं हो सकता। कोई पाषाण भी ईश्वर नहीं हो सकता, क्योंकि उसमें चित्व नहीं है, चित्व न होने से आनन्द की कल्पना भी सम्भव नहीं है।

वेद में सच्चिदानन्द यह समस्त पद उपलब्ध नहीं हैं। किन्तु वेदप्रतिपादित ईश्वर का स्वरूप इस पद में आ गया है। यह ऋषियों के अनुसन्धान का परिणाम है। भर्तृहरि कहते हैं कि वेद में विविध लिङ्गों के आधार पर तत्वविद् आचार्य उस विषय का विशद अन्वाख्यान करते हैं-स्मृतयो बहुरूपाश्च दृष्टादृष्ट-योजना:। तमेवाश्रित्य लिङ्गेभ्यो वेदविदि: प्रकल्पिता:।। परमेश्वर के सत्, चित्, आनन्द स्वरूप की वेदमूलकता के कुछ प्रमाण ये हैं-

(क) सत्-ईश्वर सत् है, इसके अनेक प्रमाण वेद में उपलब्ध हैं-प्र तद् वोचेदमृतं नु विद्वान् गन्धर्वो धाम बिभृतं गुहा सत्। (यजुर्वेद-32.7), वेनस्तत् पश्यन्निहितं गुहा सत्। (यजुर्वेद-32.8)। ईश्वर की सार्वकालिक सत्ता का निर्देश इस मन्त्र में है-यस्माज्जातं न पुरा किं चनैव य आबभूव भुवनानि विश्वा (यजुर्वेद-32.5)। ईश्वर सदा वर्तमानता के कारण सत्यस्वरूप है-अभि हि सत्य सोमपा (सामवेद-12.48)। यह ब्रह्म सृष्टि से पूर्व सत्-अस्तिरूप ही था-सदैव सौम्य इदमग्र आसीत् (छान्दोग्योपनिषद्-6.2.1)। ब्रह्म सृष्टि से पूर्व भी था-ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् (बृहदारण्य-कोपनिषद्-14.10)।

(ख) चित्-ईश्वर ज्ञान का अधिष्ठाता है। वह ज्ञानस्वरूप है-चिकित्वो अभि नो नय (सामवेद-648)। ज्ञान चेतन में ही सम्भव है, जड़ में नहीं। इससे उसकी चिद्रूपता सिद्ध है। वेद का यह वचन देखिए-ईजानश्चिमारुक्षदग्निं नाकस्य पृष्ठाद् दिवमुत्पतिष्यन् (अथर्ववेद-)। इस मंत्र का अर्थ यह है-(ईजान:) यज्ञ करने वाला (नाकस्य पृष्ठात्) सुख की स्थिति से (दिवम् उत्पतिष्यन्) मोक्ष के लिए उद्योग करता हुआ (चितम् अग्रिम्) चेतन परमात्मा को (आरुक्षत्) प्राप्त होता है। वेद में ईश्वर को यविष्ठय (सामवेद 661)-सर्वाधिक वेगवान्, मंहिष्ठ (सामवेद) सबसे बड़ा महादानी या पूजनीय, शविष्ठ (सामवेद) अत्यन्त बलवान् कहा गया है, जिनकी अन्विति चेतन में ही हो सकती है। ईश्वर को साक्षात् प्रचेतन भी कहा गया है-प्रचेतन प्रचेतयेन्द्र द्युम्नय न इषे (सामवेद 642)-हे चेतनस्वरूप व ऐश्वर्ययुक्त परमेश्वर, हमें यश और अन्न की प्राप्ति के लिए चेता। वह तो चेतना का भी चेतन है-चेतनश्चेतनानाम् (कठोपनिषद्-513)।

(ग) आनन्द-परमेश्वर सत् व चित् होने के साथ-साथ आनन्द भी है। ईश्वर के आनन्दस्वरूप में पहला प्रमाण तो यही है कि वह परिपूर्ण है। वेद में उसे पुरुष कहा गया है। पुरुष का अर्थ है-सर्वत्र पूर्णो जगदीश्वर:... यस्मात्परं नापरमस्ति किंचित यस्मान्नाणीयो न ज्यायोऽस्ति किंचित्। यह प्रमाण भी देखिए-पूर्णमद: पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदचयते (बृहदाण्यकोपनिषद्-5.1.1)। वेद में अनेक स्थलों पर ईश्वर को 'क:' कहा गया है। 'क' का अर्थ है सुखस्वरूप-कस्मै देवाय हविषा विधेम (यजुर्वेद-23.3)। वेद में मधु का अर्थ आनन्दस्वरूप भी है-आ मित्रे वरुणे भगे मधो: पवन्त ऊर्मय:। विदाना अस्य शक्मभि: (सामवेद-1234)। ईश्वर का एक नाम आनन्द भी है-आनन्दन्ति सर्वे मुक्ता यस्माद् यद् वा य: सर्वान् जीवानान्दयति स आनन्द:, जो आनन्दस्वरूप, जिसमें सब मुक्त जीव आनन्द को प्राप्त होते और सब धर्मात्मा जीवों को आनन्दयुक्त करता है, इससे ईश्वर का नाम आनन्द है। इस प्रकार ईश्वर की आनन्दरूपता में अनेक प्रमाण हैं।

2. निराकार विशेषण की वेदमूलकता

द्वितीय नियम में ईश्वर के स्वरूप के बाद उसके स्वाभाविक विशिष्ट गुणों का परिगणन आरम्भ होता है। इनमें पहला गुण है-निराकार। कुछ अन्य पदार्थ भी निराकार हैं। जैसे आकाश, आत्मा, मन आदि। ये स्थूल इन्द्रियों से गम्य नहीं हैं। इसलिए इसे स्वरूप में परिगणित न कर विशिष्ट गुण माना है। यह स्थापित सिद्धान्त है कि आकारवान् कोई भी पदार्थ सर्वव्यापक नहीं हो सकता। इसलिए यदि ईश्वर को सर्वव्यापक मानते हैं, तो उसे निराकार भी मानना ही पड़ेगा। ईश्वर की निराकारता में यह प्रसिद्ध मन्त्र अन्त:प्रमाण है-स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरम् (यजुर्वेद-40.8)। ईश्वर (अकायम्) स्थूल, सूक्ष्म व कारण शरीर से रहित है। यहाँ यह अर्थ स्वत: आपतित है कि जो शरीरवान् (साकार) है, वह ईश्वर नहीं हो सकता। वह अव्रणम्-व्रण रहित है। इसमें परमाणु भी छिद्र नहीं कर सकता अर्थात् उसमें परमाणु भी प्रविष्ट नहीं हो सकता क्योंकि साकार पदार्थ में ही छिद्र सम्भव है, निराकार में नहीं। इसलिए वेद ने अकायम् विशेषण की और अधिक पुष्टि अव्रणम् पद से की है। निराकार होने से वह बन्धनों से रहित है, नाड़ी साकार में सम्भव है, निराकार में नहीं। इसलिए उसे अस्नाविरम् भी कहा गया है। ईश्वर की निराकारता में इससे अधिक स्पष्ट अन्त: प्रमाण क्या हो सकता है। उपनिषद् भी कहती है कि ईश्वर को कोई ऊपर, नीचे, मध्य से पकड़ नहीं सकता, क्योंकि वह अनन्त कीर्तिवान ईश्वर अमूर्त अर्थात् निराकार है-नैनमूर्ध्वं न तिर्यञ्च न मध्ये परिजग्रभत्। न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश:।। (श्वेताश्वपरोपनिषद्-4.17)।

**(क्रमश:)**

# ''अकाल मृत्यु तथा भूत-प्रेत योनि की विवेचना''

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोविन्द राय आर्य एण्ड सन्ज़ १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दोतल्ला) कोलकत्ता-700007

भूत-प्रेत की उत्पत्ति के विषय में कुछ अज्ञानी, अशिक्षित और स्वार्थी लोगों ने यह धारणा बना रखी है कि जिनकी अकाल मृत्यु होती है, यानि जिनकी मृत्यु दुर्घटना से या अस्वभाविक होती है। वे लोग अपने शेष जीवन में भूत-प्रेत की योनि में चले जाते हैं। यह सर्वमान्य बात है कि जिसने जन्म लिया है उसकी मृत्यु भी निश्चित है। यह बात भूत-प्रेत पर भी लागू होनी चाहिए। जिस जीव ने भूत-प्रेत की योनि में जन्म लिया है तो उसकी मृत्यु भी होनी चाहिए। परन्तु उनके मरने की बात कभी सुनने में नहीं आई।

अकाल मृत्यु प्राप्त जीव भूत-प्रेत की योनि में जाते हैं, यह सिद्धान्त कीट-पतंग, पशु-पक्षी और अनेकों अदृश्य जीवों पर भी लागू होनी चाहिए, जो प्रतिदिन मनुष्यों द्वारा मारे जाते हैं या मार दिये जाते हैं या प्राकृतिक आपदाओं-आंधी, तूफान, भूकम्प, बाढ़ आदि में मनुष्य मर जाते हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार इनको भी भूत-प्रेत की योनि में जाना चाहिए। तब कल्पना करें कि इस संसार में भूतों की संख्या मनुष्यों की अबादी से भी कई गुणा अधिक होनी चाहिए, परन्तु ऐसा देखने में नहीं आता है। अत: यह कहना कि अकाल मृत्यु प्राप्त जीव भूत-प्रेत की योनि में जन्म लेता है, यह न तर्क सम्मत है और न विज्ञान सम्मत।

**भूत-प्रेत की योनि होती ही नहीं**-जीव का स्थूल शरीर, मन, व इन्द्रियादि साधनों के साथ ईश्वरीय व्यवस्थानुसार संयोग जन्म है, अर्थात् सूक्ष्म शरीर युक्त जीव का स्थूल शरीर के साथ संयोग का नाम ही योनि है। केवल सूक्ष्म शरीर के आधार पर भूत-प्रेत योनि को प्रमाणिक नहीं माना जा सकता है, क्योंकि बिना शरीर के कोई भी योनि नहीं होती है। स्थूल शरीर के बिना कोई भी सूक्ष्म शरीर न तो दिखाई देता है और न कोई भौतिक क्रिया ही कर सकता है। प्रजनन की विधाओं के आधार पर योनियों को चार भागों में विभाजित किया गया है-जरायुज, अण्डज, स्वेदज और उद्भिज। जरायुज का तात्पर्य है जेर से होने वाले प्राणी, जैसे मनुष्य, गाय, भैंस। अण्डज का तात्पर्य है अण्डे से होने वाले प्राणी जिसमें अधिकतर पक्षी आते हैं। स्वेदज का तात्पर्य मैला या गन्दगी में पैदा होने वाले प्राणी, जैसे जुएँ, गन्दी नाली के कीटाणु। उद्भिज्ज का तात्पर्य है, जमीन से उगने वाले प्राणी जैसे पेड़-पौधे इन्हीं चार योनियों में समस्त प्राणियों का समावेश हो जाता है। इनके अतिरिक्त पाँचवीं योनि का कोई विधान नहीं है। यह ईश्वर प्रणीत शाश्वत सिद्धान्त है। इसका उल्लंघन करने की शक्ति किसी भी जीव में नहीं है। स्मरण रहे जीव सर्वदा पराधीन होता है। वेद, शास्त्र, रामायण और गीता आदि प्राचीन ग्रंथों में कहीं पर भी भूत-प्रेत की योनि का विधान नहीं है।

कहा यह जाता है कि जिनकी अकाल मृत्यु होती है यानि जिनकी मृत्यु दुर्घटना से या अस्वभाविक मृत्यु होती ये लोग अपने शेष जीवन में भूत-प्रेत, योनि में चले जाते हैं और इधर-उधर भटकते रहते हैं। कभी-कभी भूत-प्रेत परकाया में प्रवेश कर जाते हैं और उनको सताते हैं या कष्ट देते हैं। वे सामान्यत: अपने परिचितों और स्वजनों को ही अधिक परेशान करते हैं या कष्ट देते हैं। दिवंगत आत्मा का इधर-उधर भटकना सम्भव नहीं क्योंकि वह ईश्वराधीन होने के कारण स्वतंत्रता से कुछ भी नहीं कर सकता है। परकाया में प्रवेश करना भी ईश्वरीय नियम के विरुद्ध है, क्योंकि एक शरीर में एक ही आत्मा रह सकती है। आत्मा प्रलयकाल और मोक्षावस्था को छोड़कर वह बिना शरीर के कभी नहीं रहता है। इन दोनों अवस्थाओं में वह अदृश्य रहता है।

यह निर्विवाद सत्य है कि मृत्यु के पश्चात् ईश्वरीय व्यवस्थानुसार जीव या तो दूसरे शरीर को धारण कर लेता है या मोक्ष को प्राप्त होता है। इस बीच उसके किसी अन्य के शरीर में प्रविष्ट होने या इधर-उधर घूमकर लोगों के जीवन में अच्छा-बुरा दखल देने का प्रश्न ही नहीं उठता है। मोक्ष प्राप्त जीवात्माएँ पवित्र और आनन्द मग्न रहती हैं, वह परकाया में प्रवेश कर किसी मनुष्य को कष्ट या यातनाएं दे, यह मानना अस्वाभाविक है।

मृत्यु के पश्चात् जीव को एक शरीर से निकल कर दूसरे शरीर में जाने में कितना समय मिलता है, इसका निर्देश वेदान्त दर्शन 3/1/13 वृहदारण्यक उपनिषद् 4/4/3 तथा गरुण पुराण-प्रेत अध्याय 20 श्लोक 75 में लिखा है कि-जैसे घास की सूँडी या जोक या तृणजलायुकृत भी पीछे से दूसरा पाँव तभी उठाती हैं जब कि अगला पाँव रख देती है, ठीक वैसे ही आत्मा भी अपने पहले शरीर को छोड़ने से पूर्व ईश्वर की न्याययुक्त कर्मफल व्यवस्था से अगले शरीर में स्थिति कर लेने के पश्चात् ही अपने उस शरीर को छोड़ता है।

स्थूल शरीर के बिना कुछ भी करना सम्भव नहीं अत: ईश्वर की व्यवस्था में यह आत्मा एक शरीर को छोड़कर दूसरे शरीर को तुरन्त ग्रहण कर लेता है। महाभारत वनपर्व 183/77 में कहा है-आयु पूर्ण होने पर आत्मा अपने जर्जर शरीर का परित्याग करके उसी क्षण किसी दूसरे शरीर में प्रकट होता है। एक शरीर को छोड़ने और दूसरे शरीर को ग्रहण करने के मध्य में उसे क्षणभर का समय भी नहीं लगता। अत: वैदिक सिद्धान्त के अनुसार मृत्यु और जन्म के बीच कोई समय ही नहीं बचता कि जिसमें जीवात्मा इधर-उधर भटक सके या भूत-प्रेत बन सके। सच्चाई यह है कि शरीर छोड़ने के पश्चात् जीवात्मा परमात्मा के अधीन रहता है और वह स्वतन्त्रता से कुछ नहीं कर सकता। संसार का कोई भी व्यक्ति भूत-प्रेत आदि के अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर सकता, अत: निश्चित मानिये कि तथाकथित भूतों की न कोई सत्ता है और न कोई योनि है।

सच्चाई यह है कि दुर्घटना या अस्वभाविक मृत्यु प्राप्त व्यक्ति अपनी बाकी की उम्र अगली योनि में व्यतीत करता है अर्थात् उसकी जो अगली योनि में जितनी उम्र निर्धारित होती है उसमें पहले वाली उम्र जोड़ दी जाती है। अब प्रश्न उठता है कि मृत्यु प्राप्त व्यक्ति यदि मनुष्य योनि में भी उसी स्तर में जन्म लेता है तब तो यह बात लागू हो सकती है। पर वह यदि अन्य योनियों में यानि पशु-पक्षी व कीट-पतंग की योनि में जाता है या पहले वाले मनुष्य जीवन के ऊँचे या नीचे स्तर की मनुष्य योनि ही पाता है तो उसकी आयु ईश्वर की कर्म न्याय व्यवस्था के अनुसार घट या बढ़ भी सकती है।

यह लेख मैंने अति उपयोगी समझकर ''मानव निर्माण प्रथम सोपान'' नामक पुस्तक से उद्धृत किया है जिसमें अन्त की 6-7 लाइने मैंने अपने स्वयं के विचार से पहले कभी किसी पुस्तक में पढ़ा था उसके आधार पर लिखा है जिससे लेख के उद्देश्य की पूर्ति होती है। इस लेख के पढ़ने से हर व्यक्ति भूत-प्रेत की योनि नहीं होती यानि भूत-प्रेत का भय एक प्रकार का वहम् है, इसलिए हर समझदार व्यक्ति को भय नहीं होना चाहिए। और देश व समाज की सेवा अधिक कर सकें।

पृष्ठ 4 का शेष-सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में...

सब लोग प्रीति से मिलकर सत्य का प्रकाश करें।

किसी कवि ने ठीक कहा है-

दयानन्द की देन जगत को भारी है,

हम अब तक समझे नहीं यह भूल हमारी है।

इसने पाखंड मिटाया और सच्चा धर्म सिखाया।

वह सूरज बन कर आया, संग नया सवेरा लाया।

है वेद ज्ञान ईश्वर, इस पे हक है नारी-नर का।

यह घोषणा न्यारी है, इतिहास कहे यह कदम क्रान्तिकारी है।

आर्य समाज विगत 145 वर्षों से अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर करने का काम कर रहा है तथापि समाज में यह मिथ्या बातें दूर नहीं हो पा रही हैं। ज्ञानियों व विद्वानों का कार्य असत्य को दूर करने व उसका खण्डन करने सहित सत्य के प्रसार के लिए उसका मण्डन करना है। हमें भी अपने जीवन से सभी अविद्याजन्य परम्पराओं यथा जड़ पूजा और फलित ज्योतिष आदि को दूर करना होगा। इसके स्थान पर वेदों की सत्य व कल्याणकारी शिक्षाओं को अपने जीवन में प्रमुख स्थान देना होगा। इसी से हमारा सर्वांगीण हित व कल्याण होगा और हमारा देश व समाज उन्नति के साथ-साथ आपके आदर्शों का अनुकरण अन्य व्यक्ति भी करेंगे। नैतिकता का वर्चस्व बढ़ेगा।

आत्म संयम, आत्म परिष्कार कर समाज व राष्ट्र के उत्थान हेतु एक शक्ति बन कर निरन्तर ध्येय की ओर बढ़ना ही आर्य समाज की सच्ची सेवा है व ऋषि दयानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि है।

## पृष्ठ 2 का शेष-वैदिक संस्कृति-संक्षिप्त विवेचन

**अर्थ**-हे मनुष्यों। (द्वा) दो (सुपर्णा) सुन्दर पंख वाले, गतिशील, चेतन पक्षी (सयुजा) सदैव संयुक्त रहने वाले (सखाया) मित्रों के समान वर्तमान (समानम्) एक ही (वृक्षम्) वृक्ष का (परिषस्वजाते) आश्रय लेते हैं। (तयो:) उनमें से (अन्य:) एक (पिप्पलम्) उस वृक्ष के पके हुए फल को (स्वादु) स्वादुपन से (अत्ति) खाता है और (अन्य:) दूसरा (अनश्नन्) नहीं खाता हुआ (अभिचाकशीति) सब ओर से देखता है।

इस प्रकार यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र संख्या 1 में कहा गया है-

**ईशावास्यमिदं सर्वंयत्किञ्च जगत्यां जगत्।**

**तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधकस्यस्विद्धनम्।।**

**अर्थ**-इस सम्पूर्ण चर और अचर जगत् को परमात्मा से व्याप्त होने वाला मानो। उसके द्वारा दिये गये पदार्थों का त्याग पूर्वक भोग करो। किसी के धन का लालच मत करो। सृष्टि का सम्पूर्ण धन तो सुख स्वरूप परमात्मा का है।

वैदिक संस्कृति में बहुदेववाद को मान्यता नहीं है केवल एक ईश्वर की ही मान्यता वेदों में सिद्ध की गई है।

**न द्वित्तीयो न तृतीयश्चतुर्थो नाप्युच्यते।**

**य एतं देवमेकवृतं वेद।।**

**अथर्व. 13.4.16 (पर्याय 2)**

वह अकेला वर्तमान, न दूसरा, न तीसरा, न चौथा ही कहा जाता है। जो इस अकेले प्रकाशमय वर्तमान परमात्मा को जानता है वही सत्य जानता है।

फिर मंत्र संख्या 17 व 18 में इसी धारणा को विस्तार दिया गया है।

ईश्वर की कोई प्रतिमा भी नहीं होती है। यजुर्वेद अध्याय 32 मंत्र 2 में कहा गया है 'न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यश:।' जिसकी कीर्ति ही नाम स्मरण योग्य है उस परमेश्वर की कोई प्रतिमा नहीं है।

अथर्ववेद में पृथ्वी को माता का स्थान दिया गया है। अथर्व. 12.1.12 'माता भूमि: पुत्रो अहं पृथिव्या:।'

भूमि मेरी माता है और मैं भूमि के पुत्र के तुल्य हूँ। फिर इस भावना को विस्तार दिया गया है।

**'भूमे मातर्नि धेहि मा भद्रया सुप्रतिष्ठितम्।। अथर्व. 12.1.63**

वैदिक संस्कृति में ज्ञान को सबसे अधिक मूल्यवान माना गया है। कहा गया है कि ज्ञान के अभाव में मुक्ति संभव नहीं है। वैसे भी मुक्ति के जो चार मुख्य साधन माने गए हैं उनमें विवेक का स्थान पहला है। यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र संख्या 14 में कहा गया है-

**विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वे-दोभय सह।**

**अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्यया-मृतमश्नुते।।**

**अर्थ**-(य:) जो व्यक्ति (विद्याम्) विद्या को (च) तथा (अविद्याम्) कर्म को (च तत्) इन (उभयम्) दोनों को एक साथ (सम्पन्न करने योग्य) (वेद) जानता है, वह (अविद्यया) कर्म के द्वारा (मृत्युम्) मृत्यु को (तीर्त्वा) तैर कर (विद्यया) विद्या के द्वारा (अमृतम्) मुक्ति को (अश्नुते) प्राप्त कर लेता है।

ज्ञान प्राप्ति की दृष्टि से ही शिक्षा को छ: वेदांगों में प्रथम स्थान दिया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद प्रथम वल्ली में इस पर विस्तृत वर्णन है।

**ओ३म् शिक्षा व्याख्यास्याम:। वर्णा स्वर:। मात्राबलम्।**

**साम सन्तान। इत्युक्त: शिक्षाध्याय।**

फिर सम्पूर्ण शिक्षा को 5 भागों में बांटा गया है।

**अथात: संहिताया उपनिषदं व्याख्यास्याम: पञ्चस्वधिकरणेषु।**

**अधिलोकमधि ज्योतिषमधि विद्यमधि विद्यमधि प्रजम-ध्यात्मम्।। तै. उप. 131**

इसके बाद संहिता की उपनिषद का व्याख्यान करते हैं। यह उपनिषद् पांच भागों में है, लोक के संबंध में, ज्योतिष के सम्बन्ध में, विद्या के सम्बन्ध में, सन्तान के संबंध में और शरीर के सम्बन्ध में। वास्तव में इन पांच भागों में पूर्ण विद्या का समावेश हो जाता है। 'विद्या ददाति विनयम्' विद्या से व्यक्ति में नम्रता आ जाती है। विद्या ही हमें नैतिक और अनैतिकता का भेद भी बताती है। नैतिकता की दृष्टि से आगे कहा गया है-सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यायान्मा प्रमद:। आचार्याय प्रियं धनमाहृत्य। कुशलान्न प्रमदितव्यम्। भूत्यै न प्रमदितव्यम्। स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।। तै. उप. 1.11.1

फिर नैतिकता को इसी विषय में आगे इस प्रकार विस्तार दिया है-

मातृ देवो भव। पितृ देवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवो भव। यान्यनवद्यानि कर्माणि तानि सेवित व्यानि नो इतराणि। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि। नो इतराणि।

वैदिक संस्कृति में दान की बड़ी महत्ता है। कहा गया है-श्रद्धया देयम्। अश्रद्धया देयम्। श्रियादेयम्। ह्रिया देयम्। भिया देयम्। संविदा देयम्। तै. उप. 1.11.3

दान श्रद्धा पूर्वक देना चाहिए। अश्रद्धा से भी दान देना चाहिए। लाभ में से दान देना चाहिए। लज्जा से भी दान देना चाहिए। समाज के भय से भी दान देना चाहिए। दान का फल मिलेगा यह सोच कर भी दान देना चाहिए। उपनिषद में कहा गया है कि हम सदैव सत्य ही बोलें। **'सत्यमैवजयते नानृतम्।।'** सत्य की ही जीत होती है असत्य की नहीं।

फिर अथर्ववेद काण्ड 3 सूक्त 30 में परिवार को श्रेष्ठ बनाने की विधि भी बताई गई। इस सूक्त में केवल सात मंत्र है जिन्हें आचरण में स्थान देने पर परिवार संगठित रहता है।

ऋग्वेद का अंतिम सूक्त संगठन सूक्त कहलाता है। समाज को जोड़े रखने में इन मंत्रों से बड़ी सहायता मिलती है। ये केवल 4 मंत्र है। विषय विस्तृत हो जाने से यहां हम केवल 2 मंत्र दे रहे हैं।

**संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।**

**देवा भाग यथा पूर्वे सं जानाना उपासते।। ऋ. 10.191.2**

**अर्थ**-संग चलो, संगति पूर्वक बोलो, तुम्हारे मन संगति पूर्वक विचार करें। जिस प्रकार विद्वान् एक मत होते हुए भाषा को प्राप्त करते हैं।

**समानो मंत्र: समिति: समानी समानं मन: सह चित्तमेषाम्।**

**समानं मंत्रमभिमन्त्रये व: समानेन वो हविषा जुहोमि।।**

**ऋ. 10.191.3**

**अर्थ**-तुम्हारी मन्त्रणा समान हो, मन्त्रणा करने की सभा समान हो, मन समान हो, तुम्हारे लिए समान विचार को मन्त्रणा युक्त करता हूँ। तुम्हें समान यज्ञीय पदार्थ से आदान-प्रदान करता हूँ।

अब तक हमने जिन विषयों पर चर्चा की है उनसे भी महत्वपूर्ण तीन विषय और हैं। संस्कार, वर्ण व्यवस्था और आश्रम व्यवस्था। संस्कार का अर्थ है व्यक्ति का पूर्ण परिवर्तन। उसके अन्दर से दुर्गुणों को निकाल कर सद्गुणों का आधान कर देना। इस विषय पर डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार की पुस्तक सर्वश्रेष्ठ है। उसमें संस्कारों की वैज्ञानिक व्याख्या की गई है। संस्कार 16 हैं। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ाकर्म, कर्णवेध, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन, विवाह, वानप्रस्थ, सन्यास और अन्येष्टि। संस्कार द्वारा ही श्रेष्ठ मानव बन जाता है। फिर सामाजिक विकास के लिए वर्ण व्यवस्था का बड़ा महत्व है। समाज के विकास के लिए गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर समाज को चार भागों में विभक्त किया गया है। वर्ण व्यवस्था एक खुली व्यवस्था है जिसमें व्यक्ति को अपना वर्ण बदलने की पूरी स्वतंत्रता है।

**ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद् बाहूराजन्य: कृत।**

**ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पद्भ्याम् शूद्रोऽअजायत।। यजु. 31.11**

अर्थात् ब्राह्मण बुद्धिजीवी व्यक्ति होता है। क्षत्रिय शारीरिक दृष्टि से सबल होकर समाज की रक्षा करता है। वैश्य समाज को भरण पोषण का उत्तरदायित्व निभाता है और शूद्र तीनों वर्णों की सेवा करता है। मानव के व्यक्तिगत जीवन के विकास के लिए आश्रम व्यवस्था से अच्छी कोई व्यवस्था नहीं है। इसमें मनुष्य की आयु 100 वर्ष की मान कर उसके चार भाग किये है। प्रथम आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम कहलाता है। इसमें बालक 5 वर्ष की आयु तक माता के द्वारा, 6 वर्ष से 8 वर्ष की आयु तक पिता के द्वारा शिक्षित किया जाता है। फिर 8 वर्ष की आयु के बाद शिक्षा प्राप्त करने के लिए किसी गुरूकुल में भेज दिया जाता है। जहां वह कम से कम 16 वर्ष तक अध्ययन करता है। ब्रह्मचर्य द्वारा शरीर को मजबूत बनाता है। फिर 25 वर्ष की आयु में समावर्तन संस्कार के बाद विवाह कर गृहस्थ बनता है। धर्म पूर्वक अर्थ प्राप्त कर परिवार का उत्तर दायित्व निभाता है। 50 वर्ष की आयु के बाद गृहस्थ त्याग कर वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करता है। इसमें पुन: शास्त्रों का अध्ययन कर योग साधन करता है। 75 वर्ष की आयु हो जाने पर सन्यासी बन कर देश में घूम-घूम कर धर्म प्रचार करता है।

आर्य समाज नवांशहर के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी एवं मीना भारद्वाज जी 51,000 रुपये नवांशहर के नोडल अफसर को भेंट करते हुये।

आर्य समाज अबोहर के संरक्षक श्री सोहन लाल सेतिया जी नोडल अफसर को आर्य समाज की ओर से 21000 रुपये का चैक भेंट करते हुए।

आर्य समाज मोगा के पदाधिकारी एवं सदस्य गरीब परिवारों को राशन वितरित करते हुये।

आर्य समाज फाजिल्का के पदाधिकारी एवं सदस्य गरीब परिवारों को राशन वितरित करते हुये।

आर्य समाज नवांशहर द्वारा पिछले कई दिनों से लगातार 200 आदमियों का सुबह का नाश्ता, दोपहर का भोजन एवं रात का भोजन दिया जा रहा है। इसके साथ ही आर्य समाज द्वारा कोरोना पीड़ित रोगियों को फल इत्यादि भी लगातार बांटे जा रहे हैं।

आर्य समाज वेद मंदिर भार्गव नगर जालन्धर, आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा जालन्धर, आर्य समाज बस्ती बाबा खैल जालन्धर, आर्य समाज आर्य नगर जालन्धर, आर्य समाज गांधी नगर–1 जालन्धर, आर्य समाज संत नगर जालन्धर, आर्य समाज गांधी नगर–2 जालन्धर, आर्य समाज कबीर नगर जालन्धर द्वारा संयुक्त रूप से 25,000 रुपये का चैक भेंट किया गया।

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर के पदाधिकारी एवं सदस्य गरीब परिवारों को राशन वितरित करते हुये।

आर्य समाज धूरी के पदाधिकारी एवं सदस्य गरीब परिवारों को राशन वितरित करते हुये।

स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक, सम्पादक प्रेम भारद्वाज द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर पंजाब से मुद्रित एवं गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से प्रकाशित। सम्पादक–प्रेम भारद्वाज
पीआरबी एक्ट के तहत प्रकाशित सामग्री के चयन हेतु उत्तरदायी किसी विवाद का न्यायिक क्षेत्र जालन्धर होगा। आर एन आई संख्या 26281/74 E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org